गौरी लंकेश की हत्या- आजाद सोच की हत्या

महाराष्ट्र के पुणे में नरेन्द्र दाभोलकर ने अंधविश्वासों के विरुद्ध एक जन अभियान चला रखा था। सन् 2013 में उन्हें उनके घर के नजदीक हिन्दू सेने नामक अतिवादी संगठन के लोगों ने गोली से मार दिया था। गौरी लंकेश भी उसी जुझारू परम्परा से आती हैं और इसीलिए उनकी भी हत्या हुई।

भारत में असहनशीलता व असहिष्णुता बढती जा रही है और आपस में नफ़रत का वातावरण बनाया जा रहा है। प्रजातंत्र की प्रमुख विशेषता लिखने व विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया जा रहा है। देश में आपातकाल से भी अधिक कठोर अघोषित प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं। आपातकाल में निश्पक्ष लेखकों व आलोचकों को अपने लेखों पर प्रतिबंध, प्रकाशन के बंद होन व नौकरियों से वंचित रहने का सामना करना पड़ता था लेकिन अब कट्टर हिन्दुत्व की राजनीति के अभ्युदय से उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ रही है। जो भी तर्कवादी लेखक व व्यक्ति सरकार की नीतियों, हिन्दुत्व के सिद्धांतों व संघ परिवार के कुकृत्यों न अन्धविश्वासों की आलोचना करता है उसे राष्अ्र द्रोही कहने में देर नहीं लगती तथा उसे जान से मारने की धमकी दी जाती है। उसकी हत्या करने में भी देर नहीं लगती। इस प्रकार तर्कवादी, ने संदेहवादी व उदार निष्पक्ष प्रकृति के लोग आज यहां की आधुनिक दिखने वाली कट्टर धर्मांध शक्तियों के निशाने पर है।

महाराष्ट्र के पुणे में नरेन्द्र दाभोलकर अंधविश्वासों के विरुद्ध थे और उन्होंने अंधविश्वासों के विरुद्ध एक अभियान चला रखा था। सन् 2013 में उन्हें उनके घर के नजदीक एक व्यक्ति ने गोली मार दिया। इस हत्या के कारण एक व्यक्ति को गिरफ़्तार कर लिया था। महाराष्ट्र के कोल्हापुर ज़िले के गोविंद पानसरे दक्षिणपंथी हिंदू संगठनों की आलोचना किया करते थे, उन्हें 2015 में गोली से उड़ा दिया था। उन हत्यारों में से एक को गिरफ़्तार कर लिया गया, परंतु अन्य दो हत्यारे अभी तक फ़रार है। दाभोलकर व पानसरे की हत्या का शक हिंदुत्ववादी संगठन सनातन संस्था पर है, जिसका मुख्यालय गोवा में है। गौरतलब है कि पानसेर की हत्या का एक आरोपी सनातन संस्था का सदस्य था। प्रोफ़ेसर एम.एम.कलबुर्गी भी कर्तवादी लेखक थे, उनके आलोचनात्मक लेखों के कारण कट्टरपंथी हिंदुत्ववादी दक्षिणपंथी उनके विरुद्ध थे। उनकी 2015 में कर्नाटक के धारवाड़ में उनके ही घर में हत्या कर दी गई। अभी तक इस हत्या के किसी भी आरोपी को गिरफ़्तार नहीं किया गया।

इसी कड़ी में कर्नाटक में कन्नड़ लेखिका व गोरी लंकेश पत्रिका की संपादक गौरी लंकेश की 4 सितम्बर 2017 को उसी के घर में गोली मारकर हत्या कर दी गई। गौरी लंकेश स्वतंत्र विचारों वाली, फेक न्यूज, कट्टर हिंदुत्ववादी सिद्धांतों तथा साम्प्रदायिकता की आलोचक थी जिसके कारण कट्टर धर्मांध हिन्दुत्ववादी संगठन उनसे नफ़रत करते थे। वह नक्सलियों के पुनर्वास कार्यों में भी लगी रहती थी।

गोरी की हत्या वास्तव में आजाद सोच की हत्या है और इससे इंगित होता है कि भारत में लिखने, बोलने व प्रेस की कितनी स्वतंत्रता है। अन्य लेखकों को उनके लेखों के कारण जान से मारने की धमकियां मिल रही हैं। विक्रमादित्य राजा ने तो अपने टिवटर में लिखा कि ऐसे लेखकों की एक हिट लिस्ट बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने अरुंधती राय आदि महिला लेखकों को उनके आलोचनात्मक लेखों के कारण गौरी लंकेश जैसे नतीजे भुगतने की धमकी दी है। केरल में आरएसएस समर्थकों के साझा मंच 'हिंदू एक्टिविस्ट की राज्य प्रमुख केपी शशिकला ने सेक्यूलर लेखकों को 'महामृत्युंजय हवन' कराने की सलाह देते हुए एक चेतावनी दी कि अन्यथा उनका हश्र भी गौरी लंकेश जैसा होगा। गौर तलब है कि मज़दूर मोर्चा के सम्पादक सतीश कुमार को भी अपने निर्भिक व निडर लेखों के कारण उत्तपीड़न का शिकार होना पड़ रहा है।

गौरी हत्याकान्ड की प्रेस व टेलिवीजन में कठोर निंदा की गई तथा लगभग पूरे भारत में जनता ने अपना रोष प्रकट करने के लिये प्रदर्शन किए तथा इस हत्याकाण्ड की निंदा करते हुए निष्पक्ष जांच व अपराधियों को सज़ा देने की मांग की। दूसरी तरफ़ हिंदुत्ववादी संगठन तथा उनकी सोच रखने वाले व्यक्ति इस हत्या के समर्थन में उतर गए। सोशल नेटवर्क (टिवट्र) में गौरी लंकेश के लिये बड़े भद्दे शब्दों का प्रयोग करते हुए गौरी लंकेश की हत्या का समर्थन किया गया जिनमें प्रमुख हैं-आशीष मिश्रा, विक्रमादित्य राणा व निखल दधिच। जब इस हत्याकांड के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) को दोषी ठहराया जाने लगा तो वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि इस कांड में आरएसएस व भाजपा का कोई हाथ नहीं है। केन्द्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने प्रश्न उठाया कि बिना जांच के कांग्रेस के उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने भाजपा व आरएसएस को दोषी कैसे ठहरा दिया। इसी तरह का बयान भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता ने भी दिया।

गौरतलब है कि नितिन गडकरी ने बिना किसी जांच के भाजपा व आरएसएस को क्लीन चिट कैसे दे दी। ये लोग भूल गये कि ट्विट्र पर आ रहे कमेंट हिंदुत्ववादी संगठनों की ओर इशारा करा रहे हैं। इसके अतिरिक्त कर्नाटक के विधायक व पूर्व मंत्री डी एन जीवराज ने कहा कि यदि गौरी आरएसएस के विरुद्ध नहीं लिखती तो जिंदा रहती। इस बयान ने तो हिन्दुत्ववादी संगठनों की इस हत्यकाण्ड में लिप्तता की ओर इंगित कर दिया है। नफ़रत के वातावरण को समाप्त करने व प्रजातंत्र की सुरक्षा के लिये आवश्यक है कि असहनशीलता व असहिष्णुता को नियन्त्रित करके सहनशील व सहिष्णु समाज की ओर बढ़ा जाये।

-डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

अब भाजपा को सोशल मीडिया से लगने लगा है डर

ट्रोल का जो रास्ता मोदी जी की पार्टी ने पूरे देश को दिखाया अब देश उसी राह पर चल पड़ा है और खबरों को ट्रेंड कराने की कला में भक्तों से पप्पू बीस पड़ने लगे हैं...

सूरज कुमार बौद्ध

कितनी हैरत की बात है वह राजनेता जो इसी सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे देश में अपनी बात पहुंचाने की वकालत किया करते थे, वह राजनेता जिसकी पार्टी में देश की सबसे बड़ी ट्विट्र सेल स्थापित है, वह पार्टी जिसके संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा विज्ञापन में जाता है, वह पार्टी जिसके प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार पूरे चुनाव के दौरान सोशल मीडिया को युवाओं से जुड़ने का माध्यम बताया करते थे, आज उन्हें युवाओं के सोशल मीडिया में दिखाई जा रही है सच्चाई से समस्या होने लगी है।

जी हां, मेरा इशारा भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की तरफ है। हाल में अमित शाह जी ने गुजरात में युवाओं को संबोधित करते हुए यह कहा कि युवाओं को सोशल मीडिया पर बीजेपी विरोधी बातों एवं प्रचार प्रसार पर भरोसा नहीं करना चाहिए। शाहजी आगे बढ़ते हुए यह भी कहते हैं कि इस तरह के प्रचार-प्रसार के पीछे कांग्रेस का हाथ है।

जब यही सोशल मीडिया जुमलेबाजी में आकर आपका प्रचार प्रसार कर रहा था तब आपको कांग्रेस क्यों दिखाई नहीं दिया जो आज दिखाई दे रहा है। आखिर क्यों अमित शाह जी ?

दरअसल, शासक हमेशा यही चाहता है कि उसे सिर्फ सुनने वाली भीड़ मिले बोलने वाली नहीं। अब मोदी जी को ही देख लीजिए। साहब सिर्फ 'मन की बात' करते हैं, केवल अपने मन की बात। किसी के मन की बात सुनते नहीं हैं। क्यों ?

क्या मन की बात करने का अधिकार केवल प्रधानमंत्री के पास है? हमें आपके मन की बात से कोई समस्या नहीं है लेकिन आपको हमारे मन की बात से समस्या क्यों है? क्या इसलिए कि हम सवाल करते हैं? साहब इस देश का भिखारी भी भीख मांगने वाले कटोरे पर टैक्स देता है।

फिर हम सवाल क्यों न करें? साहब जी, आप में सवाल करने से नहीं रोक सकते हैं। आपको इस बात पर विचार करना चाहिए कि आखिर वह कौन सा गुजरात विकास मॉडल है जिससे जनता लाचार होकर आपके विरुद्ध अभियान चलाई हुई है।

मोदी जी, जनता आपकी भक्त इसलिए नहीं हुई थी कि आपकी असफलताओं और नाकामियों को भी गले लगाए, बल्कि आपको उसने इसलिए चुना कि कांग्रेस की 6 दशक की नाकामियों और असफलताओं का आप जवाब बन सके। जनता ने आपको अपना सौ फीसदी दिया, पूरा देश भक्तों के नाम से पुकारा जाने लगा, लेकिन आपने सिवाय उसे नई और वाहियाता योजनाओं के झुनझुना थमाने के और कुछ नहीं दिया।

लोग आपकी पूंजीपरस्त नीतियों के कारण नित नए टैक्सों, आर्थिक मुश्किलों और बेकारों की जमातों में शामिल हो रहे हैं।

अब वही झुनझुना बजाकर जनता सोशल मीडिया पर आपको, आपके चाणक्य अमित शाह और आपकी पार्टी को नचाएगी, क्योंकि भक्त आपके जरखरीद नहीं इस देश की जनता हैं, जो निराश होकर अति उम्मीद में आपके मन की बात सुनने लगे थे।

मज़दूर मोर्चा का 1-15 सितम्बर अंक

गतांक की चीर-फ़ाड़

2017 का अंक पढने को मिला जिसमें समसामयिक महत्वपूर्ण मुद्दों पर अनेक लेख पढने को मिले। जिसमें राम-रहीम प्रकरण सुर्खियों में आ गया और टेलिविजन व समाचार पत्रों का मसाला बन गया। मज़दूर मोर्चा के इस अंक में प्रकाशित लेखों 'जब सिपाहियों ने आईजी को थप्पड़ मारा', 'रोहतक जेल में बाबा राम रहीम', 'गर्ल्स स्कूल से लड़कियां लाता था राम रहीम, गुफ़ा में बना रखा था स्विमिंग पूल', 'राम रहीम के मामले से जुड़ी वह 10 बातें जिसने आदमी को झकझोर के रख दिया', राम-रहीम भक्तों की व्यथा', 'मनोवैज्ञानिक से जानिये धर्म गुरू कैसे बनते हैं अंध भक्त', उस पत्रकार की कहानी जिसने राम-रहीम को उखाड़ फ़ेंका', 'हंसराज चौहान ने किया था 400 साधुओं को नपुंसक बनाने का खुलासा', 'जज जगदीप सिंह को सारा देश सेल्यूट क्यों कर रहा ? ' तथा बलात्कारी का समर्थक भाजपाई बाबा' में राम-रहीम प्रकरण से सम्बन्धित विभिन्न पहलूओं का सटीक विश्लेषण किया गया है।

सिरसा के पत्रकार रामचन्द्र छत्रपति व पूर्व डेरा प्रेमी रणजीत सिंह हत्या तथा 400 डेरा प्रेमियों को नपुंसक बनाने का मामला भी उच्च न्यायालय में राम-रहीम के विरुद्ध लम्बित है जिन पर उच्च न्यायालय का फैसला आना बाकी है। राम-रहीम से सभी राजनैतिक दल कांग्रेस, अकाली दल, चौटाला पार्टी तथा भरतीय जनता पार्टी (भाजपा) चुनावों में समर्थक देते रहे हैं। परन्तु भाजपा तो इन सब दलों से आगे निकल गई। हरियाणा विधानसभा चुनाव में राम-रहीम द्वारा समर्थन मिलने के फलस्वरूप सरकार बनाने के कारण हरियाणा के खेल मंत्री अनिल विज 50 लाख रुपये, शिक्षा मंत्री विलास शर्मा 51 लाख रुपए तथा सहकारिता मंत्री मनीष ग्रोवर 10 लाख रुपये सिरसा जाकर राम-रहीम को भेंट करके आए।

अनिल विज ने तो उक्त प्रकरण के बाद भी बड़ी बेशर्मी से कहा कि राम-रहीम ऐसा हो सकता है, डेरा तो ठीक है, मैं वहां जाऊंगा और उनका समर्थन भी लूंगा। अनिल विज के इस कथन से स्पष्ट है कि भाजपा व संघ परिवार की मानसिकता कैसी है। गौरतलब है कि जब तथाकथित संत आसाराम को यौन उत्पीड़न मामले में गिरफ़्तार किया गया था तब विश्व हिंदू परिषद् के एक वरिष्ठ राष्ट्रीय पदाधिकारी ने कहा था कि आसाराम की गिरफ़्तारी सरकार द्वारा हिंदू संतों व संस्कृति को बदनाम करने का षडयंत्र है। स्पष्ट है कि जब तक लोग सामाजिक व आर्थिक रूप से प्रताड़ित रहेंगे तब तक राम रहीम, आसाराम, रामपाल जैसे बाबाओं के डेरे व आश्रम चलते रहेंगे। इस पूरे प्रकरण में पूरी इमानदारी, निडरता, निष्पक्षता व निष्ठापूर्ण व साहसपूर्ण भूमिका निभाने के लिये यौन शोषित दोनों साध्वी, पत्रकार रामचंद्र छत्रपति सीबीआई के अधिकारी तथा सीबीआई के जज जगदीप सिंह प्रशंसा के पात्र हैं तो वही हरियाणा सरकार व भाजपा नेताओं की भूमिका निंदनीय है।

लेख 'रिश्वत के 25 लाख जज तक पहुंचे या बिचौलिये डकार गये' के जरिए उज़ागर किया गया है कि न्यायालयों में धन राशि से किस प्रकार निर्णय को प्रभावित किया जा सकता है और यह आवश्यक नहीं कि वह धन राशि जज साहेब के पास तक पहुंचे भी। हो सकता है कि वह राशि बिचौलिया ही हजम कर जाए। उच्च न्यायालय ने तो उस गुमनाम शिकायत व आरोपों की कोई जांच भी नहीं कराई। यदि जांच करवाई जाती तो इन आरोपों की सच्चाई सामने आ जाती।

कविता 'आज के हाईटेक बाबा' के जरिए कवि ने राम-रहीम, आसाराम, राम , राम पाल, राम देव जैसे बाबाओं और उनके राजनैतिक गठजोड़ पर उचित व्यंग्य किया है। स्मरण रहे कि बाबा रामदेव पर भी उनके गुरू की हत्या का आरोप लगाया जाता रहा है।

इस अंक में प्रकाशित अन्य सभी लेख महत्वपूर्ण व प्रशंसनीय है। राम-रहीम से सम्बन्धित प्रकाशित लेखों से स्पष्ट होता है कि मज़दूर मोर्चा का यह अंक 'राम-रहीम विशेषांक' है।

-डॉ. जुगल किशोर गुप्ता